वेदान्त आश्रम की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २२ दिसम्बर - २०२२ प्रकाशन - १२

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

दिसम्बर 2022

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९५०, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

ॐ

सदाशिवसमारम्भाम्

शंकराचार्य मध्यमाम्

अस्मदाचार्य पर्यन्ताम्

वन्दे गुरु परम्पराम्

विषय सूचि

दिसम्बर 2022

व्योमवद् व्याप्तदेहाय
दक्षिणामूर्तये नमः॥

सदा सर्वगतोऽप्यात्मा
न सर्वत्रावभासते ।
बुद्धावेवावभासेत
स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत् ॥
(आत्मबोध श्लोक 17)

आत्मा यद्यपि सर्वव्यापक है, फिर भी सभी पदार्थों में उसका भान नहीं होता है, इसका अनुभव शुद्धबुद्धि में ही होता है। जैसे स्वच्छ दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है।

पूज्य गुरुजी का सन्देश

कस्य सुखं न करोति विरागः!

ब्रह्मज्ञान की सिद्धि की पात्रता हेतु जिस 'साधन चतुष्टय सम्पत्ति' की चर्चा की जाती है, उसमें से एक गुण वैराग्य है। जहां विवेकजनित वैराग्य होता है, वहां पर ही विवेक की सार्थकता होती है, वहीं पर साधन चतुष्टय के अन्य गुण खींचे चले आते है; इसलिए वैराग्य का होना परं आवश्यक है।

वैराग्य अर्थात् 'विगत रागः', तस्य भावः वैराग्यः। विषयभोग के प्रति राग और द्वेष का अभाव ही वैराग्य है। यह गुण विवेक के फलस्वरूप होना चाहिए। साधारणतः रागादि से रहित मन में उच्चाटन, निरुत्साहिता व शिथिलता होने लगती है। मन रसिक होता है, अतः उसका स्वभाव कहीं न कहीं से रस की प्राप्ति करना है। किन्तु वैराग्य किसी नीरस अवस्था का नाम नहीं है, वह परमात्मा की महानता जानने के कारण, तथा उनके चरणों में रमने के

कस्य सुखं न करोति विरागः!

कारण अन्य वस्तुओं में असारता देखना है। अतः वैराग्य का एक और सुन्दर अर्थ होता है 'विशेषः रागः इति अपि विरागः।' जहां एक ओर दृश्य, जड़ विषयों के प्रति राग का अभाव होता है तो दूसरी और परमात्मा के प्रति विशेष भक्ति होना है।

इस सुन्दर जगत् के सृष्टा जगदीश्वर हैं, वे ही सब का कर्ता-धर्ता, कर्मफलदाता व जीवनदाता हैं। प्रतिपल उनकी कृपा की वर्षा हो रही है। अतः प्रत्येक परिस्थिति को उनका कृपाप्रसाद जानते हुए, धन्यता से स्वीकार कर पाएं। उसी धन्यता की अभिव्यक्तिरूप अपने प्रत्येक कर्म को उनके चरणों में सेवा की तरह समर्पित करना सौभाग्य समझा जाता है। इसलिए अत्यन्त संवेदना और उत्साहपूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन जीते है। वह जगदीश्वर का प्रेमी बनकर जीता हैं। जीवन स्वकेन्द्रिता से मुक्त होकर ईश्वरकेन्द्रित होने लगता है। स्वकेन्द्रिता ही राग-द्वेष का हेतु होते है। ईश्वर केन्द्रित जीवन से मन की सूक्ष्मता व संवेदना बढ़ती जाती है, और उसके अनुपात्त में जगदीश्वर की

कस्य सुखं न करोति विरागः!

करुणा, महानता, उनकी सुहृद्ता व स्नेह की अनुभूति होती जाती है तथा जगत् की असारता के निश्चय की दृढ़ता होती है; महत्वबुद्धि शिथिल होती जाती है। ईश्वर-महिमा का स्मरण ही उनके ज्ञान के लिए प्रेरित करता है।

वैराग्य का अर्थ विगतः रागः अर्थात् जो मन राग और द्वेष से रहित है।

ऐसा मन बाहरी विषयों से निःसंकल्प होकर अन्तर्मुख होने लगता है। विविध परिस्थितियों के उतार-चड़ाव व उपलब्धियां मन को उद्वलित करने का हेतु नहीं बनती है। ऐसा मन शान्त, समाहित, नीरव व प्रसन्न है। ऐसी मनोस्थिति की प्राप्ति के लिए संसारी विविध भोग का आश्रय लेता है किन्तु उससे वंचित ही रहता है व विषयजाल में उलजता जाता है। विरक्त को ऐसी सुखद अवस्था सहजरूप से प्राप्त होती है। वह मन सुखपूर्वक ज्ञानप्राप्ति हेतु समर्पित होकर सुखस्वरूप परमात्मा को अपनी आत्मा की तरह देखने में सक्षम होता है। इसलिए कहा जाता है कि 'कस्य सुखं न करोति विरागः।' वैराग्य किसको सुखद नहीं होता है!

वेदान्त लेख
अहम् ब्रह्मास्मि

ईश्वर की संवेदना

ईश्वरकेन्द्रित जीवन का नाम ही धर्ममय जीवन है। इसलिए ईश्वर का परिचय तथा उनके अस्तित्व की हृदय से संवेदना होनी चाहिए। वेद जो समस्त अपौरुषेयज्ञान के लिए प्रमाणग्रंथ है, वे बताते हैं कि 'सदेव सौम्य इदमग्र आसीत।' अर्थात् सृष्टि के परे एक मात्र सत् तत्त्व ही था। वही सत्-चिद्-आनन्द स्वरूप तत्त्व अर्थात् परमात्मा अपनी सृजनात्मिका मायाशक्ति को धारण करके इस चराचर जगत की तरह व्यक्त होने से वे ही जगत के अभिन्न-निमित्त उपादानकारण हैं। वे जगत के कण-कण को व्याप्त करके विराजमान हैं। सर्व प्रथम इसका श्रद्धापूर्वक निश्चय होना चाहिए। यही हृदय में ईश्वर की संवेदना जगाने का हेतु है। ईश्वर की महिमा को जानते हुए उनकी प्रेमपूर्ण संवेदना ही भक्ति का पर्याय है।

धर्म का आधार सदैव अध्यात्मज्ञान ही होना चाहिए।

ईश्वर की संवेदना

पूजा, जप–ध्यान, उपासना आदि रूप अनेकों कर्मकाण्ड का संवेदना व भक्ति जगाने के लिए प्रयोग होता है। किन्तु संवेदना किसी विचार, चेष्टा वा कर्म पर आश्रित अर्थात् नैमित्तिक नहीं हो सकती। यह तो उनकी भावनामात्र से उनके अस्तित्व को महसूस करना है। यह भावना इस जगत से विमुख होकर नहीं जगाई जा सकती। क्योंकि ईश्वर न शब्दगोचर और न हीं दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी महिमा किसी शब्दों के द्वारा ज्ञात नहीं होती। जो आंख खोलकर, तटस्थता से जगत की सुन्दरता देखता है – वही जगदीश्वर की महिमा को अनुभव कर सकता हैं।

इस सुन्दर जगत में एक अद्भुत व्यवस्था है, उसमें एक संवादिता दीखाई देती है। जैसे किसी ने उसे एक सूत्र में पिरोकर रखा हैं। सब अन्योन्य पूरक है। सृष्टि के पांच महाभूत तत्त्वों में से किसी एक तत्त्व का अभाव हो जाएं अथवा किसी एक प्रजाति का विनाश हो जाएं तो सृष्टि का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वायु सतत बह रही हैं, सूर्य–चन्द्र, ग्रह–नक्षत्र आदि का उदय–अस्त होना एक दिव्य घटना है। अर्थात् प्रति दिन, प्रति क्षण दिव्यता की

ईश्वर की संवेदना

अनुभूति हो रही है। सतत हो रहे जन्म-मृत्यु भी अलौकिक घटना है। इन सब के पीछे किसी महान ज्ञाननिधि, दिव्य सत्ता का अस्तित्व अनुमानित होता है। समस्त जगत को अपने क्षूद्र मैं को केन्द्र में लाए बगैर अर्थात् व्यक्तिगत प्रयोजन व अपेक्षा को किनारे करके पूर्ण उपलब्धता व सजगता से देखें, अनुभव करें तो ईश्वर के प्रत्यक्ष होने की संवेदना, अनुभूति होने लगती है।

ईश्वर के प्रत्यक्ष होने की अनुभूति में, उनकी महानता के एहसास में क्षूद्र मैं विसर्जित होने लगता है। मैं का विसर्जन होना ही नमस्कार है। एक अखण्ड, अनन्त सत्ता की संवेदना में मानों ओला पिघलकर जलमात्र शेष है। किसी बाह्य रूप, दृश्य वा मन्त्रादि में अध्यारोप करके उसका महत्व अधिक करके सत्ता को गौण कर देते है। यद्यपि उनका समग्रज्ञान न भी हो, किन्तु श्रद्धा से भी अस्तित्व की संवेदना होने पर अन्त:स्थिति चेष्टारहित होकर संन्यस्त होती है। उनकी कर्मरूप अभिव्यक्ति धन्यता से युक्त होकर धर्ममय होती है। तद्विपरीत ईश्वर की संवेदना से रहित स्वकेन्द्रित जीवन अधर्म का हेतु बनता है। ईश्वर के अस्तित्व का निश्चय ही उनके अपरोक्ष ज्ञान की ओर यात्रा का मार्ग प्रशस्त करता है।

लघु वाक्यवृत्ति

श्रुतिस्मृतिपुराणानां आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

एकद्वित्रि-क्षणेनैवं
विकल्पस्य निरोधनम्।।
क्रमेणाभ्यस्यतां यत्नाद्
ब्रह्मानुभवकांक्षिभिः।।

ब्रह्मानुभव के इच्छुक लोगोंको बहुत सावधानीपूर्वक पहले एक, दो, तीन क्षणों तक अर्थात् क्रमशः अवधि को बढाते हुए बुद्धि वृत्तियों के निरोध का अभ्यास करना चाहिए।

लघु वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने बताया कि अन्त:करण में सतत अनुभव हो रही वृत्तियों में जब पूर्व वृत्ति नष्ट हो चूकी हो, तथा दूसरी वृत्ति अभी उत्पन्न नहीं हुई हो, उस समय इन दोनों वृत्तियों के मध्य में निर्विकल्प चैतन्य स्पष्टरूप से भासित होता है। जैसे मोतियों से आवृत्त सूत्र दो मोतियों के बीच में निरावृत्त दीखता है, वैसे ही बुद्धि की समस्त वृत्तियों से व्याप्त चेतनता दो वृत्ति के मध्य में निर्विघ्न दीखाई देती है। इन वृत्ति और उसमें व्याप्त चेतना का विवेक करके उस अविकारी सूत्र को देखना चाहिए।

स्वकेन्द्रित मनोवृत्ति ही मन की बहिर्मुखता व चंचलता की हेतु है।

आज मन सतत बहिर्मुख है। इन्द्रियों के माध्यम से विषयों को ग्रहण करके उस विषयक वृत्तियों

लघु वाक्यवृत्ति

का ही सतत अनुभव होता रहता है। ऐसे में दो वृत्ति के मध्य में अवकाश होना तब ही सम्भव होता है कि जब इन्द्रियां व मन की चंचलता समाप्त हो। जब तक बाह्य जगत महत्वपूर्ण बना है तथा इन्द्रियों में तत्तद् विषयों के प्रति राग आदि विद्यमान है, तबतक उसे शान्त कर पाना कठ़िन हो जाता है। इन्द्रियों का विषयों के प्रति राग–द्वेष स्वार्थप्रेरित कामना का परिणाम है। यह स्वकेन्द्रिता की समाप्ति ईश्वरकेन्द्रित जीवन होने पर ही होती है। ईश्वर के अस्तित्व की श्रद्धा हो तथा उनकी बरसती हुई कृपा को देखकर धन्यता से आप्लवित जीवन होने पर ही स्वकेन्द्रिता समाप्त होकर ईश्वरकेन्द्रित जीवन का श्रीगणेश होता है। वहां जगत का महत्व खतम होकर जगदीश्वर का महत्व स्थापित होने लगता है। वह मन शान्त, सूक्ष्म होकर विषयों की क्षणिकता व असारता देखने में सक्षम होता है। यही विषयों से विमुख करके अन्तर्मुख बनाने में हेतु है।

ऐसा मन शान्त होने से उनमें वृत्तियों की आवृत्ति कम होती जाती है। ब्रह्मज्ञान के इच्छुक जिज्ञासु को

लघु वाक्यवृत्ति

पहले ऐसा शान्त सूक्ष्म, विवेकी बनाना चाहिए। पहले विवेकपूर्वक दो वृत्तियों में व्याप्त तथा उसके मध्य में विराजमान चेतना को देखना चाहिए। उसके उपरान्त अन्तःकरण में उठ़ती वृत्तियों के मध्य की अवधि सावधानीपूर्वक शनैः शनैः बढ़ाते जाना चाहिए। पहले एक, दो, तीन क्षणों तक, क्रमशः अवधि को बढाते हुए बुद्धिवृत्तियों के निरोध का अभ्यास करना चाहिए। इस निरोध में प्रयास की अपेक्षा होती है। किन्तु प्रयास का स्वरूप वृत्तियों का दमन नहीं करते हुए, विवेक का ही आश्रय लेना चाहिए। विवेक के उपरान्त इन वृत्तियों की अवधि बढ़ाते हुए उस-उस के मध्य में चिन्मयी सत्ता की अवेरनेस उत्पन्न करना यह अध्यात्मयात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है।

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री लक्ष्मण चरित्र

— २५ —

बन्दउं लछिमन पद जल जाता। सीतल सुभग भगत सुखदाता॥
रघुपति कीरति बिमल पताका। दण्ड समान भयउ जस जाका॥

श्री लक्ष्मण चरित्र

श्रीराम की वनयात्रा समाप्ति पर अयोध्या लोटने पर माता सुमित्रा रामानन्य अपने पुत्र लक्ष्मणजी को हृदय से लगाकर गर्वान्वित होती है। पर कैकेयाी के प्रति श्री लक्ष्मणजी ने जो सद्‌भाव प्रदर्शित किया वह कल्पनातीत था। वे अपने कृत्य के कारण समस्त अयोध्यावासियों की दृष्टि में घृणा की पात्र बन चुकी थीं। यहां तक कि पुत्र के होते हुए भी सन्त भरत ने जीवन में कभी उन्हें मां कहकर नहीं पुकारा, बात करना तो दूर की बात थी। ऐसी स्थिति में लक्ष्मण से वे कैसे व्यवहार की आशा कर सकती थीं। साधारणतः ऐसी कल्पना होती है कि लक्ष्मण की दृष्टि में वे घोर घृणा और उपेक्षा का पात्र होंगी। राम का विरोधी उन्हें असह्य है, इसे कौन नहीं जानता! पर उनका व्यवहार सर्वथा आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ। अन्य माताओं के हृदय से

श्री लक्ष्मण चरित्र

लगकर उन्होंने उन सब के प्रति अपना स्नेह और सम्मान प्रदर्शित किया; किन्तु कैकेयी अम्बा से वे बार-बार मिलते हैं। मां के प्रति उनकी दृष्टि सर्वथा भिन्न थी। वनगमन से जिस महान् उद्देश्य की सिद्धि हुई, वे उसके प्रत्यक्ष दृष्टा थे। लंका में विश्व-द्रोही रावण को विनष्ट करने की जो अतुलनीय कीर्ति प्राप्त हुई थी, उसमें मुख्य हेतु कैकेयी हैं, ऐसी उनकी धारणा थी।

उन्हें प्रभु की सेवा का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उसके लिए भी वे कैकेयी के प्रति कृतज्ञ थे। बार-बार वे उनके हृदय से लगकर अपनी भावना और कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं। इस प्रसंग में कैकेयी को जो कलंक और दुःख झेलना पड़ा है, लक्ष्मण उसमें सहभागी बनना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि मां के प्रति बड़ा अन्याय हुआ है। वे उसके परिमार्जन के लिए सचेष्ट थे। लक्ष्मण की कसौटी पर खरा उतरना बड़ा कठिन कार्य था। तत्कालीन बड़े से बड़े महापुरुषों की आलोचना में भी उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ। पर इस अर्थ

श्री लक्ष्मण चरित्र

में अभागिनी के रूप में प्रसिद्ध कैकेयी अम्बा बड़ी सौभाग्यशालिनी निकलीं। वे रामानुज की दृष्टि में खरी उतरी सिद्ध हुई। यह प्रसंग लक्ष्मण के सयंवेदनशील स्वभाव का एक अद्भुत दृष्टान्त है।

रामराज्य की स्थापना के बाद प्रभु के धनुर्धर रूप का वर्णन मानस में नहीं किया गया। प्रभु को लगा कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए एक ही धनुर्धर यथेष्ट है, वह हैं लक्ष्मण। वन से नगर में आकर भी उनके लिए कोई अन्तर नहीं पड़ा। वे अब भी प्रभु के सान्निध्य में ही रहे। यहां तक कि जब आंजनेय के द्वारा रामकथा का अद्भुत प्रवाह प्रवाहित होता था, तब भी श्रोता के रूप में केवल ये दो ही भाई होते थे। लक्षमणजी की अनुपस्थिति का संकेत यही बताने के लिए है कि मौनवृत्ति की समग्र सार्थकता उन्हीं के जीवन में है। प्रभु के सभी भक्त महान् और धन्य हैं पर जो श्रीराम के लिए अनिवार्य है और जिनके अभाव में पूर्ण ब्रह्म भी अपूर्ण प्रतीत होता है, ऐसे पात्र एकमात्र श्री लक्ष्मण हैं।

.... ॐ तत्सत्

– २८ –

उत्तरकाशी
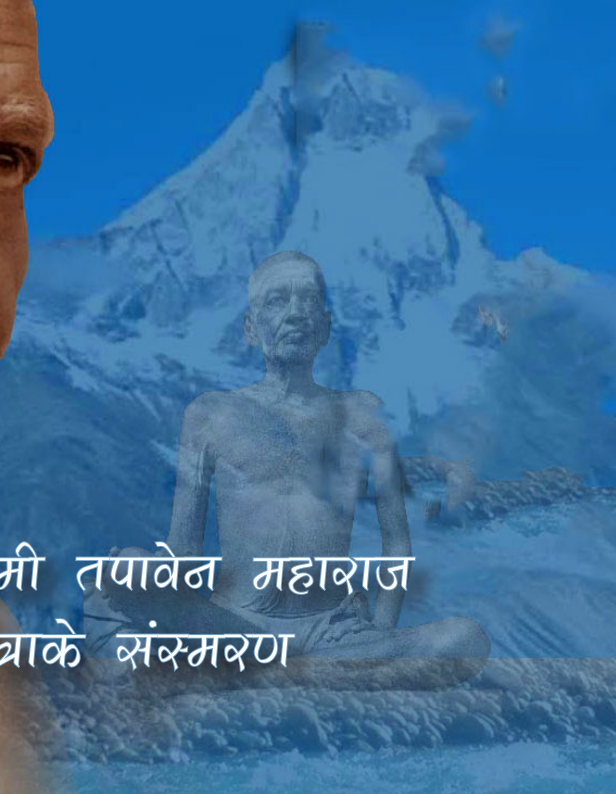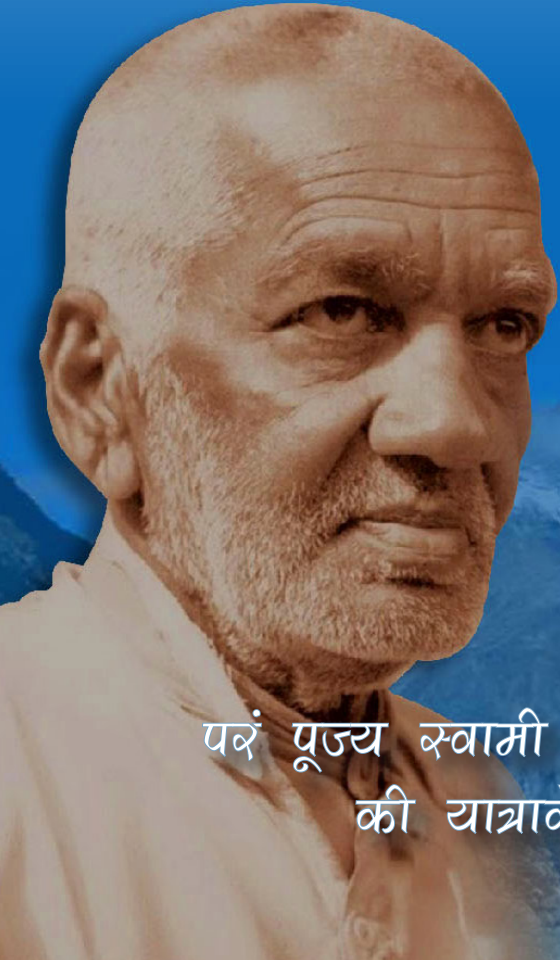
परं पूज्य स्वामी तपोवन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

टहरी नगर में आदि बदरीनाथ का एक मुख्य और मनोहारी मंदिर स्थित है। बदरीनाथ टहरी गढ़वाल के राजाओं की परंपरागत उपासना का कुल देवता है। कहा जाता है कि, इस राजवंश के कुछ प्राचीन राजाओं की पुकार पर बदरीनाथ प्रत्यक्ष हो जाया करते थे।

लीजिएं, यहा से सीधे पश्चिमोत्तरी दिशा में गंगा किनारे से होकर पथ उपर की ओर जा रहा है। यहाँ से पैतालीस मील की दूरी पर उत्तरकाशी स्थित है। शरीर स्वस्थ होने पर मैं यहाँ से दो दिनों में सौम्यकाशी पहुँच जाया करता हूँ। सर्वज्ञ परमेश्वर ने पहले ही यह जानकर मुझे कृश शरीर

जीवन्मुक्त

और लंबे पैर दिये होंगे कि मुझे एक साधु के रूप में हिमगिरि पर पैदल ही परिव्रजन करना पडेगा; कभी कभी यह सोचकर मैं उस दयानिधि की मन ही मन वन्दना करता हूँ। ईश्वर की कृपा की कोई सीमा नहीं होती। 'मुख्यं तस्य हि कारुण्यम्' ऐसा भक्ति सूत्रकार का कहना है। ईश्वर की करुणा ही करुणा है, अर्थात् ईश्वर निरपेक्ष करुणा का सागर है। उनकी कृपा में श्रद्धा नहीं रखनेवाले दु:खी होते हैं। भगवान् की कृपा में श्रद्धा रखनेवालों के लिए दु:ख का कौन सा कारण हो सकता है? सभी दशाओं में आनंद ही आनंद है। इसे छोड़कर और कोई भावना उनमें हो ही नहीं सकती। सूत्रों का तात्पर्य हैं कि इस संसारमें उत्कृष्ट लाभों की उपलब्धि में ईश्वर करुणा ही मुख्य साधन है, दूसरे सब पुरुषार्थ गौण है।

पौराणिक गाथा

दान की सार्थकता

दान की सार्थकता

असुरराज बलि अच्छे दानवीर थे; किन्तु उन्हें अपने दानवीर होने का अभिमान भी था। एक बार बलि ने एक यज्ञ किया। भगवान विष्णु उनकी यज्ञशाला में वामन का रूप धारण करके आएं। बलि ने उनका स्वागत किया और कहा कि, 'हे ब्रह्मचारी! आपको जो मांगना हो मांग लो। तब वामन ने केवल तीन पग भूमि की याचना की। बलि ने आश्चर्य से मुस्कुराकर पूछा, 'केवल तीन पग भूमि?।' तुम इतने बड़े दानी के पास आए हो और इतनी छोटी सी चीज मांग रहे हो। तब वामन ने कहा, 'हम संतोषी ब्राह्मण है; बस इतने से हमारा काम बन जायेगा।' वामन और बलि का संवाद असुरगुरु शुक्राचार्यजी सुन रहे थे, उन्होंने बलि को एकान्त में ले जाकर पूछा कि, 'तुम जानते हो ये कौन है? स्वयं भगवान विष्णु तुम्हें छलने के लिए वेश बदलकर आए हैं।' बलि ने कहा, 'हमें तो एक तेजस्वी ब्रह्मचारी दिखाई दे रहा है। यदि यह

दान की सार्थकता

भगवान हैं तो मेरा परं सौभाग्य है, कि साक्षात् भगवान बलि के द्वार पर मांगने चले आयें। जब भगवान स्वयं ही मांगने आ गये हैं तो मैं उन्हें मना नहीं करूंगा, किन्तु अवश्य दूंगा।' यह कहते हुए बलि गद्‌गद हो गया। बलि ने उनमें दीन भिक्षुक नहीं किन्तु तेजस्वी ब्रह्मचारी को देखा।

शुक्राचार्यजी उसे ईश्वर की तरह पहचान गए। किन्तु विडम्बना यह थी कि शुक्राचार्यजी को अपने शिष्य को भगवान की कृपा मिलने से ज्यादा उनके धन एवं राज्यसम्पत्ति पर अत्यधिक ममता थी। उन्होंने सोचा कि कमण्डलु से जल जहां जहां गिरेगा, वह भूमि तो बलि के हाथ से निकल जाएगी। अतः जब बलि वामन को दान देने चला गया तो स्वंय शुक्राचार्यजी उसके कमण्डलु के छिद्र में बैठ़ गये, कि जब जल ही नहीं गिरेगा तो दान भी नहीं दिया जा सकेगा और मेरे शिष्य का साम्राज्य बचा रहेगा। तब भगवान ने उसमें कुशा खोसकर शुक्राचार्यजी की एक आंख फोड़ दी। शुक्राचार्यजी के पास ज्ञान का नेत्र तो था, जिससे भगवान को पहचान गये किन्तु वैराग्य का नेत्र नहीं था। अतः वे शिष्य बलि को भी साक्षात् भगवान के सामने होने पर भी समर्पण करने से रोक रहे है।

दान की सार्थकता

दान लेते समय भगवान ने वामन से विराट् रूप को धारण कर लिया। आरम्भ में लेने वाला छोटा था और देनेवाला बड़ा। किन्तु जब तक लेने वाला बड़ा और देने वाला छोटा नहीं होता तब तक दान की सार्थकता नहीं हो पाती। दो पग में वामन ने पूरा बलि का साम्राज्य नाप लिया। अब एक पग भूमि बचने पर राजा बलि ने कहा कि मेरे पास और तो कुछ नहीं बचा है, अब केवल मेरा सिर ही बचा है। भगवान ने बलि के मस्तक पर अपना एक कदम रख दिया। तब दान पूरा हो गया। सारे ब्रह्माण्ड का दान देने पर भी जब तक अभिमान का दान नहीं दिया जाता तब तक दान की सार्थकता नहीं होती।

भगवान बलि पर प्रसन्न हो गये। और कहा कि, 'अब तुम्हें स्वर्गादि जिसकी भी कामना हो हमसे मांग लो।' तब बलि बोला कि, 'प्रभु! मुझे अब स्वर्गादि की किसी की भी कामना नहीं है, किन्तु आप इतनी कृपा कीजियेगा कि मैं जहां भी जाउं वहां आपके दर्शन होते रहे।' भगवान ने 'तथास्तु' कहा, और कहा जाता है कि तदुपरान्त भगवान उसके द्वारपाल एवं रक्षक के रूप स्थित रहे।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम समाचार
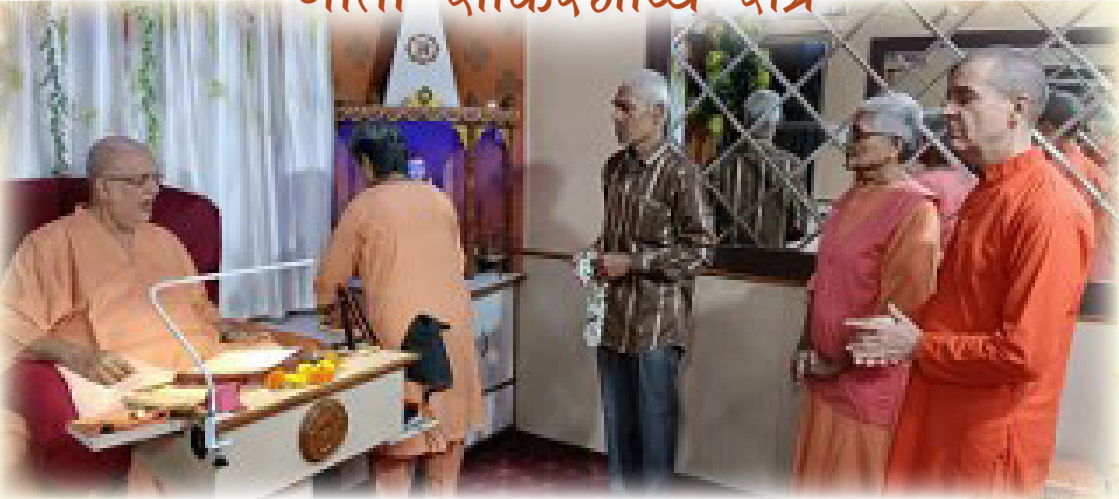
आश्रम समाचार

पू. स्वामिनी समतानन्दजी का जन्मदिन

आश्रम समाचार

ओम् नमः शिवाय

आश्रम समाचार

ओम् नमः शिवाय

आश्रम समाचार

शुभाशीष एवं शुभकामनाएं

आश्रम समाचार

१५ नवम्बर २०२२

आश्रम समाचार

आश्रम समाचार

मिश्रा परिवार द्वारा शिव-अभिषेक

मिश्रा परिवार द्वारा शिव-अभिषेक

आश्रम समाचार

भजन एवं सत्संग

आश्रम समाचार

भजन एवं सत्संग

आश्रम समाचार

ओम् सह नौ भुनक्तु..

आश्रम समाचार

गुजरात से पधारें महात्मागण

आश्रम समाचार

भजनानन्द

आश्रम समाचार

आश्रम समाचार

पार्थ मिश्रा का जन्मदिन

आश्रम समाचार

संगीत का आनन्द

आश्रम समाचार
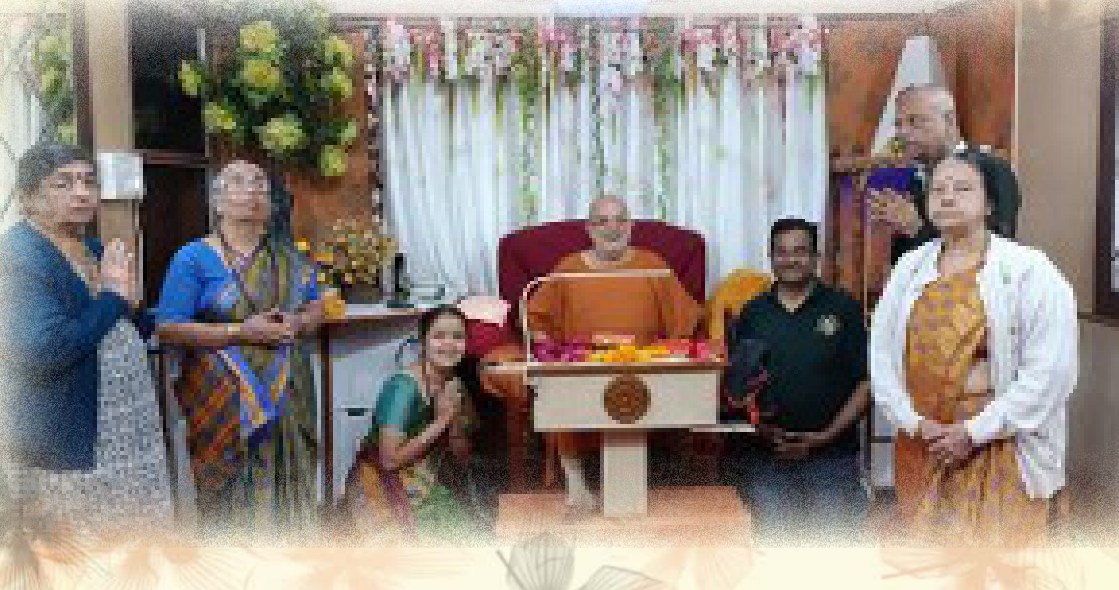
Talks on (by P. Guruji):

Video Pravachans on YouTube Channel

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

- Sundar Kand Pravachan

~ Prerak Kahaniya

- Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

INTERNET

- Kathopanishad Pravachan

- Shiva Mahimna Pravachan

- Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu (Sw. Amitananda in Guj)

~ Shiv Mahimna Stotram (Sw. Samatananda)

Online Ongoing Programs

Prerak Kahaniyan

by Swamini Poornanandaji

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

Shiv Mahimna Stotram & Gita Chanting

by Sw. Samatanandaji

Published Once a week in VDS Group
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

INTERNET

Audio Pravachans

~ Sadhna Panchakam

~ Drig Drushya Vivek

~Upadesh Saar

~ Prerak Kahaniya

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Atmabodha Lessons

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

~ Vedanta Sandesh - Dec '22

~ Vedanta Piyush - Nov '22

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

वेदान्त आश्रम में

गीताकक्षा का आरम्भ

सम्पूर्णगीता अध्ययन – शांकरभाष्य के साथ

पूज्य गुरुजी के द्वारा

आश्रम / मिशन कार्यक्रम

गीता ज्ञान यज्ञ

अमरावती

5 से 11 जनवरी 2023

पू. स्वामिनी समतानन्दजी के द्वारा

वेदान्त शिविर

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

13 से 17 फरवरी 2023

पू. गुरुजी एवं आश्रम महात्मागण द्वारा

गीता ज्ञान यज्ञ

जलगांव

14 से 20 मार्च 2023

पू. स्वामिनी पूर्णानन्दजी के द्वारा